International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialsciencejournal.in
Volume 2; Issue 11; November 2016; Page No. 85-90

जनपद पिथौरागढ़ के तहसील मुनस्यारी एवं धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

[1] डॉ0 डिगर सिंह फर्स्वाण, [2] बबीता रानी वासन

[1] विभागाध्यक्ष (बी.एड), देवभूमि इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन लालपुर रूद्रपुर उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड, भारत।
[2] सहायक प्राध्यापक, (बी.एड), देवभूमि इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन, लालपुर रूद्रपुर उधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड, भारत।

सारांश
प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद पिथौरागढ़ के तहसील मुनस्यारी एवं धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कुल विद्यार्थियों का अध्ययन हेतु चयन किया गया है। विद्यालयों में शालात्यागी का अर्थ बालक–बालिका का अनुतीर्ण होने से या अन्य कारणों से विद्यालय से पलायन करने से होता है। जिससे प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एंव अवरोधन जैसी समस्याओं में वृद्धि होने लगती है। तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। शिक्षा के सार्वभौमीकरण को दृष्टिगत् रखते हुए सरकार तथा शिक्षा विभाग द्वारा निरन्तर बुनियादी तथा प्राथमिक शिक्षा तक सबकी पहुँच तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने की पहल की जा रही है जिससे बच्चों के भविष्य का ठोस आधार विकसित हो सके। परन्तु कई कारणों से जैसे माता–पिता की निरक्षरता, बेरोजगारी, आर्थिक तंगी, विषम भौगोलिक परिस्थितियॉ तथा समुचित व्यवस्थाओं का अभाव होने से आज भी बुनियादी शिक्षा में शालात्यागी जैसी समस्यायें व्याप्त है जिनके समाधान किये बिना तथा गुणवत्तापरक बुनियादी शिक्षा प्रदान किये बिना राष्ट्र तथा समाज के भविष्य का ठोस आधार विकसित करना संभव नहीं है।

मूल शब्दः शालात्यागी दर, तुलनात्मक अध्ययन, विद्यालय पलायन, अपव्यय, अवरोधन, गुणवत्तापरक एवं बुनियादी शिक्षा।

प्रस्तावना
औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षा स्तर कहा जाता है। कोई भी राष्ट्र या समाज प्राथमिक शिक्षा के सफल संचालन के द्वारा ही अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँच सकता है। समाज एवं राष्ट्र के चहुमुखी विकास के लिए तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्राथमिक शिक्षा का महत्व कम करके नहीं आँका जा सकता है, क्योंकि बालक के भविष्य की दिशा प्राथमिक शिक्षा से ही निर्धारित होती है। प्रारम्भिक शिक्षा के सफल संचालन के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी कक्षा में निर्धारित आयु में नामांकित होकर निरन्तर कक्षा उत्तीर्ण करते हुए निर्धारित समय में प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर ले जिससे विद्यार्थी गुणवत्तापरक शिक्षा प्राप्त कर सकें तथा शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन को कम किया जा सकता है।

हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना 6 से 14 वय वर्ग के प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना गया है। प्रत्येक बच्चे को जो 6 से 14 वय वर्ग के हैं उन्हें प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने का कानूनी अधिकार प्राप्त हो गया है। परन्तु वस्तुस्थिति क्या है ? प्रारम्भिक शिक्षा की पहुंच देश में रहने वाले 6–14 वय वर्ग के प्रत्येक बच्चे तक है या नहीं ? इन सब बातों पर विचार करना व उसके प्रभावों व कारणों को जानना अत्यन्त आवश्यक है, जिससे प्रारम्भिक शिक्षा में आने वाली समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जा सके। वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा में प्रवाह आरेखण एक ज्वलन्त समस्या है। प्रवाह आरेखण के अन्तर्गत नामांकन, प्रवेश, कक्षा प्रोन्नत, कक्षा पुनरावृत्ति तथा कक्षा शालात्यागी जैसी समस्यायें आती हैं। ये समस्यायें प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण को प्रभावित कर रहे हैं। जब तक प्राथमिक शिक्षा में 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को विद्यालयों मे नामांकित कराकर उन्हे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान नहीं की जाती तथा प्राथमिक विद्यालयों में अनुतीर्ण होने से तथा किन्हीं अन्य कारणों से बार–बार कक्षा पुनरावृत्ति एवं विद्यालय पलायन जैसी समस्याओ का निदान नहीं किया जायेगा तब तक शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करना कठिन होगा। हमारे देश की प्राथमिक शिक्षा में 'अवरोधन' की समस्या भी उतना ही विकराल है जितना कि अपव्यय। अवरोधन की समस्या प्राथमिक शिक्षा में प्रारम्भ से ही एक गम्भीर चुनौती रहा है। शिक्षा एक सतत् विकासशील प्रक्रिया है। शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में नवाचारों के अनुप्रयोग के साथ–साथ समय–समय पर अनेक शैक्षिक कार्य योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। शिक्षा प्रत्येक बालक व बालिका का मौलिक अधिकार है। अतः समस्त शैक्षिक कार्ययोजनाओं का उद्देश्य देश के प्रत्येक बालक एवं बालिका को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना है। 6 से 14 वय वर्ग के सभी बच्चों का विद्यालयों में नामांकन व ठहराव सुनिश्चित करना और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम DPEP, सर्व शिक्षा अभियान SSA, मध्यान्ह भोजन योजना MDM तथा शिक्षा गारन्टी योजना EGS, जैसे कई कार्यक्रम संचालित किए जा रहे है। विद्यालय पलायन के मुख्य कारणों में एक महिलाओं का अशिक्षित होना भी है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर पुरूष रोजगार की तलाश में घर से दूर चले जाते हैं। महिला शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डा0 राधाकृष्णन आयोग (1948) ने सिफारिश की थी कि–''वहाँ शिक्षित लोग नहीं हो सकते, जहाँ शिक्षित महिलायें न हों, पलायन आज शिक्षा जगत की प्रमुख समस्या है। पलायन की समस्या का अध्ययन शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए आवश्यक है। वर्तमान समय में शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा देश के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा का प्रचार व प्रसार किया जा रहा है। क्योंकि शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य का आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक विकास तथा सामाजिक विकास संभव

है। ऐसा प्रजातांत्रिक युग के लिए अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत प्रवाह आरेखण से सम्बन्धित समस्यायें प्राथमिक शिक्षा में वैश्विक स्तर पर व्याप्त है। यह समस्या केवल भारतवर्ष की ही नहीं अपितु पूरे विश्व की समस्या हो गयी है। समाज में गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच, भाग्यवादी एवं धार्मिक दृष्टिकोण आदि समस्याओं से बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः पीढ़ी दर पीढ़ी प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण, सर्वसुलभता, एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सभी प्रयास असफल हो जाते हैं।

प्राथमिक शिक्षा के सन्दर्भ में संविधान की 45वीं धारा में स्पष्ट निर्देश है– ''राज्य इस संविधान के लागू होने के समय से दस वर्ष के अन्दर 14 वर्ष तक के आयु के बच्चों की अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करेगा।'' तभी से हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य एवं निःशुल्क करने की ओर ठोस कदम उठाए गए। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को निःशुल्क, अनिवार्य व गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान कर प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण करना है। यह बात अलग है कि उस लक्ष्य को हम 10 वर्षो के अन्दर तो क्या आज तक भी प्राप्त नहीं कर सकें है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में अनेक बाधाएं रही है जिसमें मुख्य है– सामाजिक पिछड़ापन, धनाभाव, माता–पिता की निरक्षरता, जागरुकता का अभाव, विषम भौगोलिक परिस्थितियॉं, बढ़ती हुई जनसंख्या और ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा की कमी।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैः–

1. जनपद पिथौरागढ़ के तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. जनपद पिथौरागढ़ के तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं

शोध कार्य की मुख्य परिकल्पनाएं निम्न हैः–

1. तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन है जिसके लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए उत्तराखण्ड के जनपद पिथौरागढ़ के दो सीमान्त तहसील मुनस्यारी एवं धारचूला का चयन किया गया है। मुनस्यारी एवं धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 1 से 5 तक के सभी बच्चों का अध्ययन के लिए चयन किया गया है।

उपकरण तथा तकनीकें:

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श समूहों के प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर t मान की सहायता से मध्यमान अन्तर की सार्थकता का आंकलन किया गया है। इसके अलावा 0.01 एवं 0.05 स्तर पर सार्थकता स्तर का अध्ययन किया गया हें

't' परीक्षण के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया–

$$t = \frac{M1 - M2}{SED}$$

M_1= पहले न्यादर्श समूह का मध्यमान
M_2= दूसरे न्यादर्श समूह का मध्यमान
SED = मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि

$$SED = \sqrt{PQ\left[\frac{1}{N1} + \frac{1}{N2}\right]}$$

$$P = \frac{N1P1 + N2P2}{N1 + P1}$$

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

जनपद पिथौरागढ़ के तहसील मुनस्यारी एवं धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् बालक बालिकाओं मे कक्षा शालात्यागी का लिंग के आधार पर सार्थक अन्तर ज्ञात करने हेतु शालात्यागी दर की तुलना एवं सार्थकता की जॉच t टेस्ट के द्वारा की गयी है।

1. तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका संख्या–01 में तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक कुल अध्ययनरत् बच्चों, कक्षावार कक्षा शालात्यागी करने वाले बच्चों तथा शालात्यागी दर का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 3 में सबसे अधिक 41 बच्चों ने कक्षा शालात्याग किया जिनका कुल प्रतिशत 3.13 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 1 में 25 बच्चे, कक्षा 2 में 33 बच्चे, कक्षा 4 में 12 बच्चे तथा कक्षा 5 में 24 बच्चों ने कक्षा शालात्याग किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 1.65, 2.31, 1.01 तथा 2.09 प्रतिशत था।

तालिका 1: कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बच्चों का विवरण

कक्षा	कुल बच्चे	कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बच्चे	शालात्यागी दर %
1	1510	25	1.65
2	1428	33	2.31
3	1310	41	3.13
4	1187	12	1.01
5	1146	24	2.09

तालिका संख्या–02 में जनपद पिथौरागढ़ के तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् कुल बालकों का, कक्षावार कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालकों का तथा शालात्यागी दर का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 3 में सबसे अधिक 16 बालकों ने कक्षा शालात्यागी की जिनका कुल प्रतिशत 2.48 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 1 में 10 बालकों ने, कक्षा 2 में 14 बालकों ने, कक्षा 4 में 05 बालकों ने तथा कक्षा 5 में 09 बालकों ने कक्षा शालात्यागी किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 1.37, 2.02, 0.86 तथा 1.63 प्रतिशत था।

तालिका 2: कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालकों का विवरण

कक्षा	कुल बालक	कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालक	शालात्यागी दर %
1	730	10	1.37
2	693	14	2.02
3	644	16	2.48
4	583	05	0.86
5	553	09	1.63

तालिका संख्या–03 में जनपद पिथौरागढ़ के तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् कुल बालिकाओं का, कक्षावार कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालिकाओं तथा शालात्यागी दर का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 3 में सबसे अधिक 25 बालिकाओं ने कक्षा शालात्यागी की जिनका कुल प्रतिशत 3.75 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 1 में 15 बालिकाओं ने, कक्षा 2 में 19 बालिकाओं ने, कक्षा 4 में 07 बालिकाओं ने तथा कक्षा 5 में 15 बालिकाओं ने कक्षा शालात्यागी किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 1.92, 2.58, 1.16 तथा 2.53 प्रतिशत था।

तालिका 3: कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालिकाओं का विवरण

कक्षा	कुल बालिकायें	कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालिकायें	शालात्यागी दर %
1	780	15	1.92
2	735	19	2.58
3	666	25	3.75
4	604	07	1.16
5	593	15	2.53

तालिका संख्या– 04 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा 1 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0.83 था। मुनस्यारी में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 1.37 प्रतिशत बालक तथा 1.92 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुनस्यारी में रहने वाले बालक व बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 4: शालात्यागी दर–कक्षा 01

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	730	1.37	1.65	98.35	0.66	0.83	सार्थक नहीं
बालिका	780	1.92					

तालिका संख्या–05 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा 2 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । यहॉ t मान 0.71 था। मुनस्यारी में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 2.02 प्रतिशत बालक तथा 2.58 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुनस्यारी में रहने वाले बालक व बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका संख्या 05: शालात्यागी दर–कक्षा 02

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	693	2.02	2.31	97.69	0.71	0.71	सार्थक नहीं
बालिका	735	2.58					

तालिका संख्या–06 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा 3 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया । यहॉ t मान 1.32 था। मुनस्यारी में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 2.48 प्रतिशत बालक तथा 3.75 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुनस्यारी में रहने वाले बालक व बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 6: शालात्यागी दर–कक्षा 03

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	644	2.48	3.13	96.87	0.96	1.32	सार्थक नहीं
बालिका	666	3.75					

तालिका संख्या–07 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा 4 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0.52 था। मुनस्यारी में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 0.86 प्रतिशत बालक तथा 1.16 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुनस्यारी में रहने वाले बालक व बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 7: शालात्यागी दर–कक्षा 04

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	583	0.86	1.01	98.99	0.58	0.52	सार्थक नहीं
बालिका	604	1.16					

तालिका संख्या–08 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा 5 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहाँ t मान 1.06 था। मुनस्यारी में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 1.63 प्रतिशत बालक तथा 2.53 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि मुनस्यारी में रहने वाले बालक व बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 8: शालात्यागी दर–कक्षा 05

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	553	1.63	2.10	97.90	0.85	1.06	सार्थक नहीं
बालिका	593	2.53					

2. तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का तुलनात्मक अध्ययन।

तालिका संख्या–09 में तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक कुल अध्ययनरत् बच्चों, कक्षावार कक्षा शालात्यागी करने वाले बच्चों तथा शालात्यागी दर का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 01 में सबसे अधिक 34 बच्चों ने कक्षा शालात्याग किया जिनका कुल प्रतिशत 2.51 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 02 में 23 बच्चे, कक्षा 3 में 14 बच्चे, कक्षा 4 में 29 बच्चे तथा कक्षा 5 में 16 बच्चों ने कक्षा शालात्याग किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 1.84, 1.18, 2.58 तथा 1.53 प्रतिशत था।

तालिका 9: कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बच्चों का विवरण

कक्षा	कुल बच्चे	कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बच्चे	शालात्यागी दर %
1	1356	34	2.51
2	1252	23	1.84
3	1182	14	1.18
4	1121	29	2.58
5	1047	16	1.53

तालिका संख्या–10 में जनपद पिथौरागढ़ के तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् कुल बालकों का, कक्षावार कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालकों का तथा शालात्यागी दर का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 01 में सबसे अधिक 14 बालकों ने कक्षा शालात्यागी की जिनका कुल प्रतिशत 2.16 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 2 में 09 बालकों ने, कक्षा 3 में 09 बालकों ने, कक्षा 4 में 12 बालकों ने तथा कक्षा 5 में 05 बालकों ने कक्षा शालात्यागी किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 1.49, 1.57, 2.21 तथा 0.98 प्रतिशत था।

तालिका 10: कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालकों का विवरण

कक्षा	कुल बालक	कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालक	शालात्यागी दर %
1	649	14	2ण16
2	605	09	1ण49
3	571	09	1ण57
4	543	12	2ण21
5	508	05	0ण98

तालिका संख्या–11 में जनपद पिथौरागढ़ के तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् कुल बालिकाओं का, कक्षावार कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालिकाओं तथा शालात्यागी दर का विवरण दर्शाया गया है। कक्षा 01 में सबसे अधिक 20 बालिकाओं ने कक्षा शालात्यागी किया जिनका कुल प्रतिशत 2.83 प्रतिशत था। इसी प्रकार कक्षा 2 में 14 बालिकाओं ने, कक्षा 3 में 05 बालिकाओं ने, कक्षा 4 में 17 बालिकाओं ने तथा कक्षा 5 में 11 बालिकाओं ने कक्षा शालात्यागी किया। जिनका प्रतिशत क्रमशः 2.16, 0.82, 2.94 तथा 2.04 प्रतिशत था।

तालिका 11: कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालिकाओं का विवरण

कक्षा	कुल बालिकायें	कक्षा शालात्यागी करने वाले कुल बालिकायें	शालात्यागी दर %
1	707	20	2.83
2	647	14	2.16
3	611	05	0.82
4	578	17	2.94
5	539	11	2.04

तालिका संख्या–12 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा 1 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहाँ t मान 1.0 था। धारचूला में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 2.16 प्रतिशत बालक तथा 2.83 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि धारचूला में रहने वाले बालक व बालिकायें

लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 12: शालात्यागी दर– कक्षा 01

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	649	2.16	1.55	98.45	0.67	1.0	सार्थक नहीं
बालिका	707	2.83					

तालिका संख्या–13 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा 2 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0.88 था। धारचूला में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 1.49 प्रतिशत बालक तथा 2.16 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि धारचूला में रहने वाले बालक व बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 13: शालात्यागी दर– कक्षा 02

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	605	1.49	1.84	98.16	0.76	0.88	सार्थक नहीं
बालिका	647	2.16					

तालिका संख्या–14 में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा 3 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 1.19 था। धारचूला में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 1.57 प्रतिशत बालक तथा 0.82 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि धारचूला में रहने वाले बालक व बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 14: शालात्यागी दर– कक्षा 03

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	571	1.57	1.18	98.82	0.63	1.19	सार्थक नहीं
बालिका	611	0.82					

तालिका संख्या–15 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा 4 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 0.77 था। धारचूला में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 2.21 प्रतिशत बालक तथा 2.94 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि धारचूला में रहने वाले बालक व बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 15: शालात्यागी दर– कक्षा 04

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	543	2.21	2.59	97.41	0.95	0.77	सार्थक नहीं
बालिका	578	2.94					

तालिका संख्या–16 में प्रदर्शित प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बच्चों में कक्षा 5 में शालात्यागी दर में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। यहॉ t मान 1.39 था। धारचूला में रहने वाले 6–11 वय वर्ग के बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर की समस्या से 0.98 प्रतिशत बालक तथा 2.04 प्रतिशत बालिकायें प्रभावित थे। यद्यपि दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था तथापि यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि धारचूला में रहने वाले बालक व बालिकायें लगभग समान रूप से इस समस्या से प्रभावित थे।

तालिका 16: शालात्यागी दर– कक्षा 05

समूह	न्यादर्श	प्राप्तांकों का %	P	Q	SE %	t	सार्थकता स्तर
बालक	508	0.98	1.53	98.47	0.76	1.39	सार्थक नहीं
बालिका	539	2.04					

निष्कर्ष

1. जनपद पिथौरागढ़ के तहसील मुनस्यारी के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर अध्ययन करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए।
   i) कक्षा 1 में 1.37 प्रतिशत बालकों ने तथा 1.92 प्रतिशत बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
   ii) कक्षा 2 में 2.02 प्रतिशत बालकों ने तथा 2.58 प्रतिशत बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
   iii) कक्षा 3 में 2.48 प्रतिशत बालकों ने तथा 3.75 प्रतिशत बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
   iv) कक्षा 4 में 0.86 प्रतिशत बालकों ने तथा 1.16 प्रतिशत बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
   v) कक्षा 5 में 1.63 प्रतिशत बालकों ने तथा 2.53 प्रतिशत बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
2. जनपद पिथौरागढ़ के तहसील धारचूला के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में शालात्यागी दर का लिंग के आधार पर अध्ययन करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए।
   i) कक्षा 1 में 2.16 प्रतिशत बालकों ने तथा 2.83 प्रतिशत बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
   ii) कक्षा 2 में 1.49 प्रतिशत बालकों ने तथा 2.16 प्रतिशत बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
   iii) कक्षा 3 में 1.57 प्रतिशत बालकों ने तथा 0.82 प्रतिशत बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
   iv) कक्षा 4 में 2.21 प्रतिशत बालकों ने तथा 2.94 प्रतिशत बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।
   v) कक्षा 5 में 0.98 प्रतिशत बालकों ने तथा 2.04 प्रतिशत बालिकाओं ने कक्षा शालात्याग किया।

अतः तहसील मुनस्यारी एवं धारचूला में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् बालक बालिकाओं में शालात्यागी दर में लिंग के आधार

पर सांख्यिकीय दृष्टिकोंण से कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पनाएं सही सिद्ध होती है।

अध्ययन के निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर शालात्यागी दर के अध्ययन के उपरान्त निम्नलिखित सुझाव समीचीन प्रतीत होते है। ये निष्कर्ष एंव सुझाव शिक्षा के योजनाकारों, प्रशासकों तथा शिक्षकों के लिए प्राथमिक शिक्षा के प्रसार तथा गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

1. प्राथमिक शिक्षा में कक्षा शालात्यागी के कारणों को चिन्हित कर उनके समाधान के लिए लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए जिससे विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक वातावरण सृजित किया जा सकता है जिससे बच्चे उच्च शैक्षिक उपलिब्ध स्तर को प्राप्त कर सकते है।
2. बुनियादी शिक्षा में एक कक्षा में एक से अधिक वर्ष व्यतीत करने के कारणों को पता लगाकर उसके समाधान हेतु ठोस नीति तैयार किया जा सकता है।
3. प्राथमिक शिक्षा में कक्षा शालात्यागी की समस्या के समाधान के लिए शिक्षण नवाचारों का प्रयोग कर शिक्षण को व्यावहारिक, आसान व रूचिकर बनाने का प्रयास अपेक्षित है।
4. जो विद्यार्थी अनुतीर्ण हो रहे है अथवा निम्न शैक्षिक उपलिब्ध के कारण अवसादग्रस्त है उनके मार्गदर्शन हेतु परामर्शदाता की व्यवस्था विद्यालयों में की जानी चाहिए।
5. प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एंव अवरोधन जैसी समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए। इस हेतु माता–पिता तथा अभिभावकों को प्रेरित करने के लिए निरन्तर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है।
6. प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाकलापो में बच्चो की समुचित भागीदारी सुनिश्चित कराकर तथा शिक्षण में खेल विधि का प्रयोग किया जाये, जिससे बच्चों में शिक्षण के प्रति रूचि तथा आत्मविश्वास में वृद्धि किया जा सके।
7. प्राथमिक शिक्षा हेतु दूरस्थ क्षेत्रों में समस्त शैक्षिक सुविधायें विकसित कर नामांकन और ठहराव में वृद्धि किया जा सकता है।
8. प्राथमिक विद्यालयों में बार–बार अनुतीर्ण होनेए धनाभाव तथा अन्य कारणों से विद्यालय पलायन के कारणों को पता लगाकर उसके समाधान हेतु ठोस नीति तैयार किया जा सकता है।

स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा में कक्षा शालात्यागी होने से अपव्यय एवं अवरोधन जैसी समस्यायें व्याप्त होती हैं। जब तक प्राथमिक शिक्षा में कक्षा शालात्यागी के कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर करने का सार्थक प्रयास नहीं किया जायेगा तब तक राष्ट्र तथा समाज के भविष्य का ठोस आधार विकसित नहीं किया जा सकता है। ऐसा प्रयास किया जाना समीचीन होगा क्योंकि राष्ट्र का भविष्य इन्हीं बालक व बालिकाओं के कन्धों पर है। जब तक सभी बालक–बालिकाओं को विद्यालयों में नामांकित कराकर उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर उनका सर्वांगींण विकास नहीं किया जाता तब तक राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की कल्पना करना व्यर्थ ही होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रैकवार, रामगोपाल (2000) प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता स्तर की समस्या, प्राइमरी शिक्षक, अप्रैल, 12–16।
2. गुप्ता, दलजीत (1983) ''ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ नॉनफारमल एजुकेशन प्रोग्राम'' (ऐज ग्रुप 9–14) रन बाई डिफ्रेन्ट एजेन्सीज इन द स्टेट ऑफ मध्य प्रदेश पी0एच0डी0 एजुकेशन, भोपाल विश्वविद्यालय ।
3. मिश्र, जयनारायण (1998) अनुदेशकों की दृष्टि में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की समस्यायें, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाय, 15–23।
4. तोमर, लज्जाराम (1991) भारतीय शिक्षा के मूल तत्व, सुरूचि प्रकाशन केशवकुंज झण्डेवाला, नई दिल्ली, संस्करण।
5. गैरेट, एचण् ई (1981) मनोविज्ञान एंव शिक्षा में सांख्यिकी। दशम संस्करण। बी एफ एण्ड सन्स बॉम्बे।
6. नयाल, जीण् एस (1985) विद्यालय से पलायन के कारण भारतीय आधुनिक शिक्षा। वर्ष द्वितीय अंक चतुर्थ। एनण् सीण् ईण् आरण् टीण् नई दिल्ली।
7. उतरांचल दूरस्थ शिक्षा कार्यकम (2006) विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एंव विश्लेषण। उतरांचल सभी के लिए शिक्षा परिषद डीण् पीण् ईण् पीण् – 3 देहरादून
8. पाठक, पीण् डी एंव त्यागी, जीण् एसण् डीण् (2008) भारतीय शिक्षा के आयोग कोठारी कमीशन सहित। आगरा पब्लिकेशन आगरा।
9. मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2002) सर्व शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए एक अभियान। नई दिल्ली : प्रारम्भिक शिक्षा एंव साक्षरता विभाग)